ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 121-124

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

मद्यव्यसनी एवं गैर–मद्यव्यसनी पुरुषों में चिंता

1. डॉ0 सुनीता कश्यप
2. डॉ0 रेखा जोशी
3. प्रो0 मधु लता नयाल

1. अतिथि संकाय– मनोविज्ञान विभाग, एस.एस.जे. विश्वविद्यालय, परिसर अल्मोडा, 2. सहायक प्रोफेसर– मनोविज्ञान विभाग, एम.बी.जी.पी.जी. कॉलेज, हलद्वानी, 3. प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग, एस.एस.जे. विश्वविद्यालय, परिसर, अल्मोडा (उत्तराखण्ड), भारत

Received-19.08.2023, Revised-25.08.2023, Accepted-30.08.2023 **E-mail: suneetakashyap30@gmail.com**

सारांश: ***प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य मद्यव्यसनी एवं गैर–मद्यव्यसनी पुरुषों में चिंता का तुलनात्मक अध्ययन करना है। अध्ययन की 2X2 कारक अभिकल्प (डिजाइन) के आधार पर प्रतिदर्श में 400 पुरुषों का चयन उत्तराखंड के नैनीताल जिले से यादृच्छिक चयन द्वारा किया गया है जिसमें आयु वर्ग के आधार पर मद्यव्यसनी समूह के लिए 200 पुरुषों का चयन नशा मुक्ति एवं पुनर्वास केन्द्रों से एवं गैर मद्यव्यसनी समूह के लिए 200 पुरुषों का चयन सार्वजनिक स्थानों से किया गया है। चिंता स्तर के मापन के लिए कपूर (1970) द्वारा भारतीय अनुकूलित चिंता मापनी के आत्म विश्लेषण प्रपत्र का उपयोग किया गया है अध्ययन परिणाम में मद्यपान सेवन एवं आयु के आधार पर निर्मित विभिन्न समूहों में, मद्यव्यसनी एवं गैर मद्यव्यसनी पुरुषों के चिंता स्तर में तथा युवा एवं वयस्क पुरुषों में चिंता स्तर में सार्थक अंतर पाया गया। मद्यपान सेवन एवं आयु वर्ग के मध्य चिंता स्तर में अंतक्रिया सार्थक पायी गयी ।***

कुंजीभूत शब्द– मद्यपान सेवन , चिंता, मद्यव्यसनी, गैर–मद्यव्यसनी, अभिकल्प, यादृच्छिक चयन, सार्वजनिक, वयस्क, अंतक्रिया ।

प्राचीन वैदिक काल में मद्यव्यसन व्यवहार की व्याख्या एक नैतिक समस्या के रूप में की जाती थी तथा मद्यव्यसनी व्यक्ति के मद्यव्यसन व्यवहार का कारण उसकी नैतिक दुर्बलता एवं दुर्बल इच्छा शक्ति को माना जाता था इसी कारण प्राचीन भारतीय वैदिक इतिहास में इस बात का प्रमाण मिलता है कि मद्यव्यसनी व्यवहार के उपचार एवं निवारण हेतु मन्त्र विद्या एवं नैतिक शिक्षा का सहारा लिया जाता था परन्तु आधुनिक काल में मनोवैज्ञानिक दृष्टि से मद्यव्यसन को एक द्रव्य सम्बन्धी वि.ति माना जाता है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार "मद्यव्यसनी व्यवहार का मूल कारण अंतर्निहित दमित मानसिक कठिनाईयाँ है, जिनकी अभिव्यक्ति मद्यव्यसनी व्यक्ति अपने भीतर दमित आन्तरिक एवं बाह्य असहनीय प्रतिबलों के प्रति मद्यपान सेवन करके, प्रतिक्रिया व्यक्त करके करता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा अल्कोहल एवं स्वास्थ्य पर हाल ही में जारी वैश्विक स्थिति रिपोर्ट के अनुसार प्रत्येक वर्ष मद्यपान के हानिकारक मात्रा में सेवन के कारण वैश्विक स्तर पर लगभग तीन लाख लोग मर जाते है और अल्कोहल के हॉनिकारक सेवन से मरने वाले सभी लोगों में एक तिहाई से अधिक पुरुष वर्ग से है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा जारी वैश्विक स्थिति रिपोर्ट (2018) के अनुसार प्रत्येक वर्ष मद्यपान के हानिकारक सेवन से इतनी बड़ी मात्रा में जन हानि के साथ–साथ विश्व स्तर पर बीमारी एवं दुर्घटना के कारण पड़ने वाले कुल वैश्विकबोझ में से लगभग 5.1 प्रतिशत वैश्विक बोझ के लिए भी मद्यपान का हानिकारक मात्रा में किया जाने वाला सेवन ही उत्तरदायी है। विश्व स्तर पर लगभग 2.3 अरब लोग मद्यपान का सेवन करते है। जिसमें लगभग 27 प्रतिशत मद्यपान सेवन करने वाले ऐसे युवा व्यक्ति है जिनकी आयु 15 से लेकर 19 वर्ष की है। वैसे मद्यपान सेवन का सम्बन्ध किसी विशेष आयु वर्ग से नहीं है, परन्तु राष्ट्रीय मद्यपानता एवं मद्यपान दुरूपयोग संस्थान (NIAAA) की रिपोर्ट के अनुसार आज विश्व स्तर पर मद्यपान का हानिकारक मात्रा में सेवन सबसे ज्यादा युवा वर्ग के व्यक्तियों द्वारा ही किया जा रहा है।

इस प्रकार मद्यपानता का सर्वाधिक प्रसार वयस्कों में देखा जा रहा है। राष्ट्रीय मद्यपानता एवं मद्यपान दुरूपयोग संस्थान की वर्ष 2015 में प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार, 18 वर्ष से अधिक के युवाओं में मद्यपान सेवन की व्यापकता सर्वाधिक देखी गई थी। इस प्रकार वर्तमान समय में मद्यपान का हानिकारक मात्रा में सेवन 15 से 40 वर्ष के युवा एवं वयस्क वर्ग में असमय मृत्यु एवं दिव्यांगता पूर्ण समायोजित जीवन के लिए सबसे आम जोखिम कारक बन गया है, जिससे समस्त संसार मद्यपान के हानिकारक सेवन से उत्पन्न होने वाली समस्याओं का दंश झेल रहा है।

चिंता एक आशंका एवं भय की भावना है जिसकी अभिव्यक्ति कुछ शारीरिक लक्षणों जैसे हृदय की धड़कन तेज होना, अत्यधिक पसीना आना एवं तनाव की स्थिति से होती है इस प्रकार चिंता को भय के संवेगात्मक भाव के रूप में परिभाषित किया जाता है। मद्यपान के हॉनिकारक मात्रा में सेवन एवं सामाजिक चिंता विकार को लेकर किये गए एक अध्ययन के परिणाम निष्कर्ष में सामाजिक चिंता विकार से पीड़ित प्रत्येक पाचवें व्यक्ति में मद्यपान उपयोग विकार होने की बात कही गयी है। इसके अतिरिक्त कई मनोवैज्ञानिक अध्ययनों में मद्यपान सेवन में निर्धारित मात्रा एवं अल्कोहल की खपत से पड़ने वाले प्रभाव की व्याख्या भी की गयी है।

विल्सन (1988) ने अपने शोध अध्ययन में पाया कि मद्यपान के एक निर्धारित एवं निश्चित सेवन करने वाले मद्यव्यसनी व्यक्तियों ने चिंता के कम होने के अनुभव की रिपोर्ट की थी तथा मद्यपानी व्यक्तियों ने मद्यपान व्यवहार की व्याख्या आनंद की स्थिति से की थी। मनोवैज्ञानिकों द्वारा कई अध्ययन ऐसे भी किये गए थे जिनमें मद्यपान के हॉनिकारक सेवन के साथ चिंता तथा भावात्मक विकार के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन किया गया था।

कॉक्स एवं एंडलर (1990) ने मादक द्रव्यों में विशेषकर मद्यपान के हानिकारक सेवन एवं भय से सम्बंधित चिंता के मध्य समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन की समीक्षा का उद्देश्य मद्यव्यसनी व्यक्तियों में चिंता का निर्धारण करना था। अध्ययन में चयनित सभी प्रतिभागियों की कुल संख्या में से 40 प्रतिशत मद्यपानी व्यक्तियों में घबराहट के साथ चिंता विकार पाया गया था।

इसी प्रकार आर्य, सिंह एवं गुप्ता (2017) ने "मद्यपान निर्भरता सलंक्षण के साथ रोगियों में जीवन की गुणवत्ता" विषय

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

पर शोध अध्ययन किया था। जिसमें अध्ययन की डिजाइन के अनुसार नशा–मुक्ति केंद्र से 100 मद्यव्यसनी व्यक्तियों का चयन किया गया। चयनित सभी प्रतिभागियों के जीवन की गुणवत्ता के मूल्यांकन के लिए मद्यपान प्रत्याहार नैदानिक मूल्यांकन संस्थान–रिवाइज्ड एवं मिनी अन्तराष्ट्रीय न्यूरो मनोचिकित्सकीय साक्षात्कार का उपयोग किया गया था परिणाम विश्लेषण में चयनित सभी प्रतिभागियों में से 32 प्रतिशत मद्यव्यसनी व्यक्तियों में मनोरोग विकार की व्यापकता पायी गयी। इसके अतिरिक्त 13 प्रतिशत मद्यव्यसनी व्यक्तियों में मनोरोग के साथ–साथ चिंता विकृति पायी गयी थी।

इस प्रकार मद्यपान का हॉनिकारक सेवन व्यक्ति के स्वास्थ्य को नकरात्मक रूप से प्रभावित करता है जिस कारण मद्यव्यसनी व्यक्ति अपनी परिवारिक और व्यावसायिक दोनों जिम्मेदारियों का निर्वहन ठीक से नहीं कर पता है जिससे उसे परिवार और समाज दोनों से उपेक्षित होना पड़ता है स मद्यव्यसनी व्यक्तियों में अपनी भूमिका का उचित निर्वहन न कर पाने के कारण, उत्पन्न आत्मग्लानि के भाव से और अधिक मानसिक रूप से पीड़ित हो जाता हो सकता है।

उद्देश्य–

- मद्यपान सेवन एवं आयु वर्ग के आधार पर निर्मित विभिन्न समूहों के मध्य चिंता का अध्ययन करना।
- मद्यव्यसनी एवं गैर मद्यव्यसनी पुरुषों में चिंता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- युवा एवं वयस्क पुरुषों में चिंता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- चिंता हेतु मद्यपान सेवन एवं आयु वर्ग के मध्य अंतक्रिया प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना–

- मद्यपान सेवन एवं आयु वर्ग के आधार पर निर्मित विभिन्न समूहों में चिंता के मध्य सार्थक अंतर होगा।
- मद्यव्यसनी एवं गैर मद्यव्यसनी पुरुषों में चिंता के मध्य सार्थक अंतर होगा।
- युवा एवं वयस्क पुरुषों में चिंता के मध्य सार्थक अंतर होगा।
- चिंता हेतु मद्यपान सेवन एवं आयु वर्ग के मध्य चिंता स्तर में सार्थक अंतक्रिया होगी।

प्रतिदर्श–प्रस्तुत अध्ययन के लिए प्रतिदर्श में 200 मद्यव्यसनी पुरुषों एवं 200 गैर मद्यव्यसनी पुरुषों का चयन उद्देश्यपूर्ण यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि द्वारा नैनीताल जिले से किया गया है मद्यव्यसनी समूह के पुरुषों का चयन आयु वर्ग 21 से 25 (100 मद्यव्यसनी पुरुष) एवं 26 से 30 (100 मद्यव्यसनी पुरुष) के आधार पर नैनीताल जिले के अंतर्ग्रत आने वाले नशा मुक्ति एवं पुनर्वास केन्द्रों से किया। इसी प्रकार गैर मद्यव्यसनी समूह के पुरुषों का चयन समान आयु वर्ग के आधार पर नैनीताल जिले के सार्वजनिक स्थानों से किया गया।

उपकरण– प्रस्तुत अध्ययन में प्रयोज्यों के चिंता स्तर के मापन के लिए कपूर (1970) द्वारा आई. पी. ए .टी. चिंता मापनी के भारतीय अनुकूलन के हिंदी संस्करण का उपयोग किया गया है। आई. पी. ए. टी. चिंता मापनी मूल रूप से (Kurg, Scheier and Cattell 1961) द्वारा निर्मित की गयी थी आई. पी. ए. टी. चिंता मापनी में कुल 40 कथन आत्म विश्लेषण रूप में दिए गए है। मापनी पर प्राप्त उच्च प्राप्तांक से चिंता के उच्च स्तर का एवं निम्न प्राप्तांक से चिंता के निम्न स्तर का पता चलता है।

परिणाम विश्लेषण– तालिका संख्या 1

चिंता स्तर पर प्रसरण विश्लेषण

प्रसरण का स्रोत	वर्गों का योग (SS)	df	मध्यमान वर्ग (M S)	F	सार्थकता 0.05 स्तर पर
समूह के मध्य	21853.41	3	7284.47	234.16	सार्थक
मद्यपान सेवन (A)	21579.61	1	21579.61	693.68	सार्थक
आयु वर्ग (B)	139.24	1	139.24	4.47	सार्थक
अंतक्रिया (A x B)	134.56	1	134.56	4.32	सार्थक
कुल प्रसरण	12318.98	396	31.109		

तालिका संख्या 2

विभिन्न समूहों के चिंता स्तर पर प्राप्त प्राप्तांकों का संयुक्त मध्यमान

मद्यपान सेवन / आयु	मद्यव्यसनी	गैर मद्यव्यसनी	संयुक्त मध्यमान
युवा पुरुष	52.02	38.49	45.25
वयस्क पुरुष	54.36	38.51	46.44
संयुक्त मध्यमान	53.19	38.50	

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

तालिका संख्या 3

चिंता चर पर विभिन्न समूहों के मध्य 0.05 स्तर पर क्रांतिक अंतर

स्मूह	N	अंतर की मानक त्रुटि	क्रांतिक अंतर
AB	100	0.79	1.56
A/B	200	0.55	1.09

परिणाम एवं व्याख्या– तालिका संख्या 1 एवं 2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि मद्यव्यसनी युवा एवं गैर मद्यव्यसनी युवा, मद्यव्यसनी वयस्क एवं गैर मद्यव्यसनी वयस्क, तथा मद्यव्यसनी युवा एवं मद्यव्यसनी वयस्कों में चिंता स्तर के मध्य सार्थक अंतर पाया गया जबकि गैर मद्यव्यसनी युवा एवं गैर मद्यव्यसनी वयस्क में चिंता स्तर के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया गया। जिसमें मद्यव्यसनी वयस्क समूह में चिंता स्तर अन्य समूहों की तुलना में सार्थक रूप से अंतर लिए हुए है। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन की परिकल्पना संख्या 1 आंशिक रूप से स्वीकृत की जाती है।

उपरोक्त परिणाम से स्पष्ट है कि मद्यव्यसनी युवा एवं वयस्क प्रयोज्यों में चिंता स्तर अन्य समूहों के चिंता स्तर की तुलना में सार्थक रूप से उच्च है जिसका कारण अधिकांश मद्यव्यसनियों में अंतर्निहित तनाव के साथ–साथ अपनी सामजिक और परिवारिक भूमिका में असफल होने के कारण कुंठित होना हो सकता है। मद्यव्यसनी पुरुष अपनी मद्यव्यसन की आदत के कारण चाह कर भी अपनी आवश्कताओं को पूरा नहीं कर पाते। इस प्रकार मद्यव्यसनी प्रयोज्यों में बढ़ी हुई चिंता का एक कारण अपनी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति न हो पाना हो सकता है। खान एवं विजयश्री (2004) ने मद्यव्यसनी पुरुषों में चिंता का स्तर गैर मद्यव्यसनी पुरुषों के चिंता स्तर की तुलना में सार्थक रूप से उच्च पाया। इस प्रकार प्रस्तुत परिणाम अध्ययन के परिणामों का प्रत्यक्ष रूप से समर्थन करते है। लुइस एवं अन्य (2000) ने अपने अध्ययन परिणाम में मद्यव्यसनी पुरुषों मद्यपान विहीन पुरुषों की तुलना में व्यक्तिगत एवं सामाजिक अलगाव के साथ साथ उच्च स्तर के विषाद एवं चिंता से पीड़ित पाए। चौधरी, सलदान्हा, सैनी, दीवान, सिंह एवं पाठक (2018) ने अपने क्रॉस सेक्शनल अस्पताल आधारित अध्ययन मद्यपान निर्भरता से ग्रस्त मद्यव्यसनी व्यक्तियों की कुल संख्या में से 46. 59 प्रतिशत में व्यक्तित्व विकार, 10.23 : में विषाद विकृति एवं 7.9 प्रतिशत में चिंता सहित विषाद विकृति पायी गयी थी इसके अतिरिक्त 7.97 प्रतिशत मद्यव्यसनी व्यक्तियों में समायोजन विकृति से भी पीड़ित पाए गए थे। इस प्रकार परिणाम अध्ययन का प्रत्यक्ष समर्थन करते है ।

तालिका संख्या 1 एवं 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि चिंता स्तर पर मद्यव्यसनी प्रयोज्यों का मध्यमान गैर मद्यव्यसनी प्रयोज्यों के मध्यमान की तुलना में उच्च है तथा दोनों समूहों के मध्य अंतर की सार्थकता हेतु प्राप्त एफ–अनुपात का मान 0.05 स्तर पर सार्थक है। इस प्रकार अध्ययन की परिकल्पना संख्या 2 स्वीकृत की जाती है इस प्रकार अध्ययन का परिणाम मद्यव्यसनियों में चिंता के उच्च स्तर को प्रदर्शित करता है जिसका कारण मद्यव्यसनियों का अपने परिवारिक उत्तरदायित्वों को पूर्ण न कर पाने से उत्पन्न कुंठा के साथ–साथ व्यावसायिक जीवन में असफल होना हो सकता है। चौधरी, दास, एवं उकील (2006) ने भी गैर मद्यव्यसनी पुरुषों की तुलना में मद्यव्यसनी पुरुषों में चिंता का स्तर सार्थक रूप से उच्च पाया। इस प्रकार प्रस्तुत परिणाम अध्ययन के परिणामों का प्रत्यक्ष रूप से समर्थन करते है। जिससे अध्ययन के परिणामों की पुष्टि होती है। इरफान, कौर, पंवार, थिंड, एवं फारुकी (2012) ने दो समूहों के चिंता के मध्य सार्थक अंतर पाया। इस प्रकार प्रस्तुत परिणाम अध्ययन के परिणामों का अप्रत्यक्ष रूप से समर्थन करते है।

तालिका संख्या 1 एवं 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि चिंता स्तर पर युवा प्रयोज्यों के मध्यमान की तुलना में वयस्क प्रयोज्यों का मध्यमान उच्च है तथा दोनों समूहों के मध्य अंतर की सार्थकता हेतु प्राप्त एफ–अनुपात का मान 0.05 स्तर पर सार्थक है। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन की परिकल्पना संख्या 3 स्वीकृत की जाती है तथा परिणाम दर्शाते है कि वयस्क प्रयोज्यों के चिंता स्तर पर प्राप्त मध्यमान प्राप्तांक युवा प्रयोज्यों के चिंता स्तर पर प्राप्त मध्यमान की तुलना में सार्थक रूप से उच्च है जो वयस्कों में चिंता के उच्च स्तर को स्पष्ट कर रहा है भारतीय परिवेश में चूँकि 21 से 25 वर्ष के अधिकांश युवा शिक्षा पूर्ण करते है तथा माता –पिता पर आश्रित होते है जिसमें स्वाभविक रूप से जिम्मेदारियां कम होती है इसके विपरीत 26 से 30 वर्ष की अवस्था में अधिकांश व्यक्ति रोजगार की तलाश के साथ –साथ जीवन में स्थिरता को लाने का प्रयास करते है तथा अपनी परिवारिक जिम्मेदारियों को भी समझने लगते है जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि अधिकांश वयस्क प्रयोज्यों में चिंता के उच्च स्तर के होने का कारण परिवारिक एवं आर्थिक जीवन में असफल होने के साथ साथ अपनी आयु के सापेक्ष उत्तरदायित्वों का निर्वहन न कर पाना हो सकता है स देवी (1969) ने दो समूहों में चिंता स्तर के मध्य सार्थक अंतर पाया। इस प्रकार परिणाम प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों का अप्रत्यक्ष रूप से समर्थन करते है ।

तालिका संख्या 1 एवं 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि चिंता स्तर पर मद्यपान सेवन एवं आयु के मध्य अंतक्रियात्मक प्रभाव के लिए अंतर की सार्थकता हेतु प्राप्त एफ–अनुपात मान सार्थक है अर्थात् चिंता स्तर को मद्यपान सेवन एवं आयु भिन्न–भिन्न रूप से प्रभावित करते है। इस प्रकार प्रस्तुत परिणाम अध्ययन की परिकल्पना संख्या 4 का समर्थन करते है अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष–

– मद्यपान सेवन एवं आयु के आधार पर निर्मित विभिन्न समूहों में चिंता के मध्य सार्थक अंतर पाया गया।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

- मद्यव्यसनी एवं गैर मद्यव्यसनी पुरुषों में चिंता के मध्य सार्थक अंतर पाया गया ।
- युवा एवं वयस्कों में चिंता के मध्य सार्थक अंतर पाया गया।
- मद्यपान सेवन एवं आयु चिंता के लिए भिन्न–भिन्न रूप से प्रतिक्रिया करते है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Chaudhury, S., Saldanha, D., Saini, R., Diwan, C., Singh, V. P., & Pathak,V.,(2018) "Comorbid Psychiatric disorder in Alcohol dependency :A case control study ." publication at: Journal of Psychiatry open access Journal 21 (3) PP available at: https://doi.10.4172/2378-5756-1000442
2. Cox. J.B., & Endler, N.S., (1990), " Substance abuse and panic- related anxiety : critical Review," Journal of Behaviour Research and Therapy 28(5)PP. 385-393. Available at: https://doi.org/10.1016/0005-7967(90)90157-E
3. Chaudhury,S., Das,S. K., & Ukil, B., (2006), Psychological Assessment of Aloholism in Males, Indian Journal of psychiatry 48(2),114-117
4. Khan,S A., & Vijayshri (2013) , "A comparative study of Depression and Anxiety among Alcoholic and Non-Alcoholic" Indian Journal of Health and Wellbeing 4(9)PP 1787- 1789.
5. Irfan. M., Kaur,N., Panwar, N., Thind,H. S, Faeooqi, M., (2012), A Comparative Study Of Working and Non-Working Women : Effect of Anxiety Level on Life Satisfaction Indian Journal of Psychology and mental Health 6(2)169-178
6. Loas,G., Otmani, O., Lecercle, C., & Jouvent, R., (2000), Relationship between the Emotional and Cogni tive components of Alexithymia and dependency in Alcoholics, Journal of Psychiatry Research 96(1)PP.63-74
7. John, A., Barman, A., Bal, D., Chandy, G., Samuel, J., Thokchom, M., (2009) Hezardus alcohol use in rural southern Indian natree ,privelance and risk factors, National Medical Journal of India 22(1) 123-125
8. Wilson, G.T. (1988) Alcohol and Anxiety Behaviour Research and Therapy 26(5) 369-381.
9. NIAAA National Institute on Alcohol Abuse and Alcoholism (NIAAA) NIH, "Alcohol Facts and statistics report." Available at: www.niaaa,nih. gov /alcohol-heath /overview-alcohol-consumption/alcohol-facts-and-statistics 2015
10. NSDUH: Substance Abuse and Mental Health Service, Substance Abuse and Mental Health Service Administration (2015) , National survey on drug use and health (NSDUH) - table 5. 6 substance use disorder in past year among persons aged 18 or older , by demo graphic characteristics: numbers in thousands ,2014 and 2015 . available at : https:// www.samhsagov/data/sites/default/file /NSDUH-DetTabs-2015/NSDUH-DetTabs-2015?NSDUH -DetTabs-2015.htm#tab5-6a
11. W. H. O.: Global status Report 2018. Geneva " Harmful use of alcohol kills more then 3 million people each year ,most of them men" available at: https://www.who.int

    W. H.O.: Global status Report 2018. Geneva " WHO launches SAFER Alcohol control initiative to prevent and reduce alcohol Related death and disability https://www.who.int/substence_abuse/safer/launch/en/

    World health organization : Global status Report 21 September 2018. Geneva "ALCOHOL" Fact sheets, available at: https://www.who.int

    WHO : Global Health Observatory(GHO) data, Global Information System on Alcohol and Health(GISAH), https://www.who.int/gho/alcohol/en/

    NIAAA National Institute on Alcohol Abuse and Alcoholism (NIAAA) NIH, "Alcohol Facts and statistics report." Available at: www.niaaa,nih. gov /alcohol-heath /overview-alcohol-consumption/alcohol-facts-and- statistics 2018

*****